# Job

## Chapter 15

Amharic Interlinear

Reference: Amharic Selassie Bible

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| וַיֹּאמַֽר׃ | הַתֵּימָנִ֗י | אֱלִיפַ֥ז | וַ֭יַּעַן | 1 |
| -እና-አለ | -ያ-ቴማናዊ | ኤሊፋዝ | -እና-መለሰ | |
| H0559 | H8489 | H0464 | | |

ቴማናዊውም ኤልፋዝ መለሰ እንዲህም አለ።

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| בִטְנֽוֹ׃ | קָדִֽים | וִֽימַלֵּ֖א | ר֑וּחַ | דַֽעַת־ | יַעֲנֶ֣ה | הֶֽחָכָ֗ם | 2 |
| ማሕፀኑ | ምሥራቅ-ነፋስ | -እና-ይሞላል | ነፋስ | እውቀት | ይመልሳል | ጥበበኛ | |
| H0990 | H6921 | H4390 | H7307 | H1847 | | H2450 | |

በውኑ ጠቢብ ሰው እንደ ንፋስ በሆነ እውቀት ይመልሳልን? በሆዱስ የምሥራቅን ነፋስ ይሞላልን?

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| בָֽם׃ | יוֹעִ֥יל | לֹֽא־ | וּ֝מִלִּ֗ים | יִסְכּ֑וֹן | לֹ֣א | בְּ֭דָבָר | הוֹכֵ֣חַ | 3 |
| -በ-እነርሱ | ይጠቅምም | አል | -እና-ቃላት | ይጠቅምም | አል | -በ-ቃል | መኖኈፅ | |
| | H3276 | H3808 | H4405 | H5532 | H3808 | H1697 | H3198 | |

ከማይረባ ነገር፥ ወይስ ከማይጠቅም ንግግር ጋር ይዋቀሳልን?

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אֵֽל׃ | לִֽפְנֵי־ | שִׂ֝יחָ֗ה | וְתִגְרַ֥ע | יִרְאָ֑ה | תָּפֵ֣ר | אַ֭תָּה | אַף־ | 4 |
| አምላክ | -ከ-ፊት | ቅሮት | -እና-ትቀንሳለህ | ፍርሃት | ትአፍርሳለህ | አንተ | እንዲያውም | |
| H0410 | H6440 | H7881 | H1639 | H3374 | | | H0637 | |

አንተም እግዚአብሔርን መፍራት ታፈርሳለህ፤ በእግዚአብሔር ፊት አምልኮን ታስቀራለህ።

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| עֲרוּמִֽים׃ | לְשׁ֣וֹן | וְ֝תִבְחַ֗ר | פִ֑יךָ | עֲוֺנְךָ֣ | יְאַלֵּ֣ף | כִּ֤י | 5 |
| የተተላሳይች | አንባ | -እና-ትመርጣለህ | አፋህ | በደልህ | ያስተማራል | ምክንያቱም | |
| H6175 | H3956 | H0977 | H6310 | H5771 | H0502 | | |

በደልህ አፍህን ያስተምረዋል፥ የተንኰለኞችንም አንደበት ትመርጣለህ።

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| בָֽךְ׃ | יַֽעֲנוּ־ | וּ֝שְׂפָתֶ֗יךָ | אָ֑נִי | וְֽלֹא־ | פִ֭יךָ | יַרְשִׁיעֲךָ֣ | 6 |
| -በ-አንተ | ይመሰክራሉ | -እና-ከንፈሮችህ | እኔ | -እና-አል | አፋህ | ያኩሰሃል | |
| | | H8193 | H0589 | H3808 | H6310 | H7561 | |

የሚፈርድብህ አፍህ ነው እንጂ እኔ አይደለሁም። ከንፈሮችህም ይመሰክሩብሃል።

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| חוֹלָֽלְתָּ׃ | גְּבָע֣וֹת | וְלִפְנֵ֖י | תִּוָּלֵ֑ד | אָ֭דָם | הֲרִאישׁ֣וֹן | 7 |
| ተወለድክ-ን | ኩርባዎች | -እና-ከ-ፊት | ተወለድክ-ን | ሰው | የመጀመሪያው-ን | |
| | H1389 | H6440 | H3205 | H0120 | H7223 | |

በውኑ መጀመሪያ የተወለድህ ሰው አንተ ነህን? ወይስ ከተራሮች በፊት ተፀነስህን?

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| חָכְמָֽה׃ | אֵלֶ֣יךָ | וְתִגְרַ֖ע | תִּשְׁמָ֑ע | אֱל֣וֹהַּ | הַבְסוֹד | 8 |
| ጥበብ | -ወደ-አንተ | -እና-ትቀንሳለህ | ሰማህ-ን | አምላክ | ምስጢር | |
| H2451 | H0413 | H1639 | H8085 | H0433 | H5475 | |

የእግዚአብሔርንስ ምሥጢር ሰምተሃልን? ወይስ ጥበብን ለብቻህ አድርገሃልን?

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| הֽוּא׃ | עִמָּ֣נוּ | וְֽלֹא־ | תָ֝בִ֗ין | נֵדָ֑ע | וְלֹ֣א | יָ֭דַעְתָּ | מַה־ | 9 |
| እርሱ | ከ-እኛን-ጋር | -እና-አል | ትአውቃለህ | እናውቃለንም | -እና-አል | አወቅክ | ምን | |
| H1931 | | H3808 | H0995 | H3045 | H3808 | H3045 | H4100 | |

እኛ የማናውቀውን አንተ የምታወቀው ምንድር ነው? ከእኛ ዘንድስ የሌለው የምታስተውለው ምንድር ነው?

10

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| גַּם־ | שָׂב | גַּם־ | יָשִׁישׁ | בָּנוּ | כַּבִּיר | מֵאָבִיךָ | יָמִים׃ |
| ደግሞ | የሰበ | ደግሞ | አሮግት | -በ-እኛን | ታላቅ | -ከ-አባትህ | ቀናት |
| H1571 | H7867 | H1571 | H3453 | | H3524 | H0001 | H3117 |

በዕድሜ ከአባትህ የሚበልጡ ሽበትም ያላቸው ሽማግሌዎችም ከእኛ ጋር አሉ።

11

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| הַמְעַט | מִמְּךָ | תַּנְחֻמוֹת | אֵל | וְדָבָר | לָאַט | עִמָּךְ׃ |
| ትንሽ-ን | -ከ-አንተ | መጽናናቶች | አምላክ | -እና-ቃል | በፀመጥ | ከ-አንተ-ጋር |
| H4592 | | H8575 | H0410 | H1697 | | |

በውኑ የእግዚአብሔር ማጽናናት፥ በየውሃትም የተነገረህ ቃል ጥቂት ነውን?

12

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| מַה־ | יִּקָּחֲךָ | לִבֶּךָ | וּמַה־ | יִּרְזְמוּן | עֵינֶיךָ׃ |
| ምን | ይይዘህ | ልብህ | -እና-ምን | ይያዐጦል | ዓይኖችህ |
| H4100 | H3947 | | H4100 | H7335 | |

ልብህስ ለምን ይወስድሃል? ዓይኖችህስ ለምን ይገለምጣሉ?

13

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| כִּי־ | תָשִׁיב | אֶל־ | אֵל | רוּחֶךָ | וְהֹצֵאתָ | מִפִּיךָ | מִלִּין׃ |
| ምክንያቱም | ትመልሳለህ | -ወደ | አምላክ | ነፍስህ | -እና-አወጣህ | -ከ-አፋህ | ቃላት |
| | H7725 | H0413 | H0410 | H7307 | H3318 | H6310 | H4405 |

በእግዚአብሔር ላይ መንፈስህን እስከ ማንሣት ደርሰህ፤ ይህንም ቃል ከአፍህ እስከ ማውጣት ደርሰህ።

14

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| מָה־ | אֱנוֹשׁ | כִּי־ | יִזְכֶּה | וְכִי־ | יִצְדַּק | יְלוּד | אִשָּׁה׃ |
| ምን | ሰው | ምክንያቱም | ይንፀሃል | -እና-ምክንያቱም | ይፀድቃል | የተወለደ | ሴት |
| H4100 | H0582 | | H2135 | | H6663 | H3205 | H0802 |

ንጹሕ ይሆን ዘንድ ሰው ምንድር ነው? ጻድቅስ ይሆን ዘንድ ከሴት የተወለደ ምንድር ነው?

15

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| הֵן | [בקדשו] | (בִּקְדֹשָׁיו) | לֹא | יַאֲמִין | וְשָׁמַיִם | לֹא־ | זַכּוּ | בְעֵינָיו׃ |
| እነሆ | (-በ-ቅዱሳኖቹ) | -በ-ቅዱሳኖቹ | አል | አመነም | -እና-ሰማያት | አል | ንጹሃን-ናቸው | -በ-ዓይኖቹ |
| H2005 | H6918 | H6918 | H3808 | H0539 | H8064 | H3808 | H2141 | |

እነሆ፥ በቅዱሳኑ ስንኳ አይታመንም፤ ሰማያትም በፊቱ ንጹሐን አይደሉም።

16

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| אַף | כִּי־ | נִתְעָב | וְנֶאֱלָח | אִישׁ־ | שֹׁתֶה | כַמַּיִם | עַוְלָה׃ |
| እንዲያውም | ምክንያቱም | የተጠላ | -እና-የበለሰ | ሰው | የሚጠጣ | -እንደ-ውሃ | በደል |
| H0637 | | H8581 | H0444 | H0376 | H8354 | H4325 | |

ይልቁንስ አስጸያፊና የረከሰ፥ ኃጢአትንም እንደ ውኃ የሚጠጣ ሰው ምንኛ ያንስ?

17

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| אֲחַוְּךָ | שְׁמַע־ | לִי | וְזֶה־ | חָזִיתִי | וַאֲסַפֵּרָה׃ |
| አስተማርሃለሁ | ስማ | -ለ-እኔ | -እና-ይህ | አየሁ | -እና-እጠርሬናለሁ |
| H2331 | H8085 | | H2088 | H2372 | |

18

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| אֲשֶׁר־ | חֲכָמִים | יַגִּידוּ | וְלֹא | כִחֲדוּ | מֵאֲבוֹתָם׃ |
| የ | ጥበቦች | ይነግራሉ | -እና-አል | ደበቁ | -ከ-አባቶቻቸው |
| | H2450 | H5046 | H3808 | H3582 | H0001 |

ምድሪቱ ለብቻቸው ተሰጥታ የነበረች፥

19

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| לָהֶם | לְבַדָּם | נִתְּנָה | הָאָרֶץ | וְלֹא־ | עָבַר | זָר | בְּתוֹכָם׃ |
| -ለ-እነርሱ | ብቻቸውን | ተሰጠች | -ያ-ምድር | -እና-አል | ላለፍ | እንግዳ | -በ-መካከላቸው |
| H0905 | | H5414 | H0776 | H3808 | | | H8432 |

በመካከላቸውም እንግዳ ያልገባባቸው ጠቢባን፤ ከአባቶቻቸው ተቀብለው የተናገሩትን ያልሸሸጉትንም፥ እነግርሃለሁ፤ ስማኝ፤ ያየሁትንም እነግርሃለሁ።

20

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| כָּל־ | יְמֵי | רָשָׁע | הוּא | מִתְחוֹלֵל | וּמִסְפַּר | שָׁנִים | נִצְפְּנוּ | לֶעָרִיץ׃ |
| ሁሉ | ቀናት | ክፉ | እርሱ | ይጠማል | -እና-ቁጥር | ዓመታት | ተደበቁ | -ለ-አማጺ |
| H3605 | H3117 | H7563 | H1931 | | H4557 | H8141 | H6845 | H6184 |

ክፉ ሰው ዕድሜውን ሙሉ፥ ከግፈኛ በተመደቡለት በዓመታት ሁሉ በሕመም ይጣጣራል።

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| יְבוֹאֶנּוּ׃ | שׁוֹדֵד | בַּשָּׁלוֹם | בְּאָזְנָיו | פְּחָדִים | קוֹל־ | 21 |
| ይመጣበታል | ዘራፊ | -በ-ሰላም | -በ-ጠይኖቹ | ፍርሃቶች | ድምጽ | |
| H0935 | H7703 | H7965 | H0241 | H6343 | | |

የሚያስደነግጥ ድምፅ በጆሮው ነው፤ በደኅንነቱም ሳለ ቀማኛ ይመጣበታል።

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| חָרֶב׃ | אֱלֵי־ | הוּא | (וְצָפוּי) | [וצפו] | חֹשֶׁךְ | מִנִּי־ | שׁוּב | יַאֲמִין | לֹא־ | 22 |
| ሰይፍ | -ለ | እርሱ | የተዘገበ | (የተዘገበ) | ጨለማ | -ከ | መመለስ | አመነም | አል | |
| H2719 | H0413 | H1931 | H6822 | H6822 | H2822 | | H7725 | H0539 | H3808 | |

ከጨለማ ተመልሶ እንዲወጣ አያምንም፥ ሰይፍም ይሸምቀበታል።

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| חֹשֶׁךְ׃ | יוֹם־ | בְּיָדוֹ | נָכוֹן | כִּי־ | יָדַע | אַיֵּה | לַלֶּחֶם | הוּא | נֹדֵד | 23 |
| ጨለማ | ቀን | -በ-እጁ | የተዘገበ | ምክንያቱም | አወቀ | የት | -ለ-እንጀራ | እርሱ | ተዘዋሪ | |
| H2822 | H3117 | H3027 | | | H3045 | H0346 | H3899 | H1931 | H5074 | |

ተቅበዝብዞም። ወዴት አለ? እያለ እንጀራ ይለምናል፤ የጨለማ ቀን እንደ ቀረበበት ያውቃል።

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| לַכִּידוֹר׃ | עָתִיד | כְּמֶלֶךְ | תִּתְקְפֵהוּ | וּמְצוּקָה | צַר | יְבַעֲתֻהוּ | 24 |
| -ለ-መታከት | የተዘገበ | -እንደ-ንጉሥ | ይአስተዋለዋል | -እና-ጥቅፀት | ጥቀት | ያስደንግጠዋል | |
| H3593 | H6264 | H4428 | H8630 | H4691 | | H1204 | |

መከራና ጭንቀት ያስፈራሩታል፤ ለሰልፍ እንደ ተዘጋጀ ንጉሥ ያሸንፉታል፤

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| יִתְגַּבָּר׃ | שַׁדַּי | וְאֶל־ | יָדוֹ | אֵל | אֶל־ | נָטָה | כִּי־ | 25 |
| ይታኖራል | ሁሉን-ቻይ | -እና-ወደ | እጁ | አምላክ | -ወደ | ዘረጋ | ምክንያቱም | |
| H1396 | H7706 | H0413 | H3027 | H0410 | H0413 | H5186 | | |

እጁን በእግዚአብሔር ላይ ዘርግቶአልና፥ ሁሉንም በሚችል አምላክ ላይ ደፍሮአልና፥

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| מָגִנָּיו׃ | גַּבֵּי | בַּעֲבִי | בְּצַוָּאר | אֵלָיו | יָרוּץ | 26 |
| ጠጉሮቹ | ከፈቶች | -በ-ውፍረት | -በ-አንገት | -ወደ-እርሱ | ይሠዳል | |
| H4043 | H1354 | H5672 | | H0413 | H7323 | |

በደንዳና አንገቱና በወፍራሙ በጋሻው ጕብጕብ እየሠገገ ይመጣበታልና፥

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| כָסֶל׃ | עֲלֵי־ | פִּימָה | וַיַּעַשׂ | בְּחֶלְבּוֹ | פָנָיו | כִסָּה | כִּי־ | 27 |
| ወጋ | -በ | ስባት | -እና-አደረገ | -በ-ስባው | ፊቱ | አደበቀ | ምክንያቱም | |
| H3689 | | H6371 | | H2459 | H6440 | H3680 | | |

በስብም ፊቱን ከድኖአልና፥ ስቡንም በወገቡ ላይ አድርጓልና፥

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| לְגַלִּים׃ | הִתְעַתְּדוּ | אֲשֶׁר | לָמוֹ | יֵשְׁבוּ | לֹא־ | בָּתִּים | נִכְחָדוֹת | עָרִים | וַיִּשְׁכּוֹן | 28 |
| -ለ-ክድሞች | ተዘገቡ | የ | -ለ-እነርሱ | ይኖሩ | አል | ቤቶች | የተደመሰሱ | ከተሞች | -እና-ኖረ | |
| H1530 | H6257 | | | H3427 | H3808 | | H3582 | | H7931 | |

በተፈቱም ከተሞች ውስጥ፥ ሰውም በሌለባቸው፥ ክምር ለመሆን በተመደቡ ቤቶች ውስጥ ተቀምጦአልና

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| מִנְלָם׃ | לָאָרֶץ | יִטֶּה | וְלֹא־ | חֵילוֹ | יָקוּם | וְלֹא־ | יֶעְשַׁר | לֹא־ | 29 |
| ንብረቱ | -ለ-ምድር | ያስሰዳም | -እና-አል | ሐብቱ | ይነሳም | -እና-አል | ይከብርም | አል | |
| H4512 | H0776 | H5186 | H3808 | H2428 | | H3808 | H6238 | H3808 | |

ባለጠጋ አይሆንም፥ ሀብቱም አይጸናም፤ ጥላውንም በምድር ላይ አይጥልም፤

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| פִּיו׃ | בְּרוּחַ | וְיָסוּר | שַׁלְהָבֶת | תְּיַבֵּשׁ | יֹנַקְתּוֹ | חֹשֶׁךְ | מִנִּי־ | יָסוּר | לֹא־ | 30 |
| አፋው | -በ-ነፋስ | -እና-ይራቃል | የእሳት-ነበልባል | ያደርቃል | ጥስርቱ | ጨለማ | -ከ | ይራቅም | አል | |
| H6310 | H7307 | H5493 | H7957 | H3001 | H3127 | H2822 | | H5493 | H3808 | |

ከጨለማ አይወጣም፤ ነበልባሉም ቅርንጫፎቹን ያደርቃቸዋል፥ አበባዎቹም ይረግፋሉ።

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| תְמוּרָתוֹ׃ | תִּהְיֶה | שָׁוְא | כִּי־ | נִתְעָה | (בַּשָּׁו) | [בשו] | יַאֲמֵן | אַל־ | 31 |
| ብድሉ | ይሆናል | ከንቱነት | ምክንያቱም | የተሳተ | -በ-ከንትንነቱ | (-በ-ከንትንነቱ) | ይአምን | አል | |
| H8545 | H1961 | H7723 | | H8582 | H7723 | H7723 | H0539 | H0408 | |

> ዋጋው ከንቱ ነገር ይሆናልና ራሱን እያሳተ በከንቱ ነገር አይታመን።

| 32 | בְּלֹא־ | יֹ֭ומֹו | תִּמָּ֑לֵא | וְ֝כִפָּתֹ֗ו | לֹ֣א | רַעֲנָֽנָה׃ |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | -ከ-በፊት | ቀኑ | ይፅፅማል | -እና-ቀንሱ | አል | የለለም |
| | H3808 | H3117 | H4390 | H3712 | H3808 | |

> ቀኑ ሳይደርስ ጊዜው ይፈጸማል፥ ቅርንጫፉም አይለመልምም።

| 33 | יַחְמֹ֣ס | כַּגֶּ֣פֶן | בִּסְרֹ֑ו | וְ֝יַשְׁלֵ֗ךְ | כַּ֝זַּ֗יִת | נִצָּתֹֽו׃ |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | ይወድቃል | -እንደ-ወይን | የአልበሰለው | -እና-ይጠልል | -እንደ-ወይራ | አበባው |
| | H2554 | H1612 | H1154 | H7993 | H2132 | H5328 |

> እንደ ወይን ያልበሰለውን ዘለላ ያረግፋል፤ እንደ ወይራ አበባውን ይጥላል።

| 34 | כִּֽי־ | עֲדַ֣ת | חָנֵ֣ף | גַּלְמ֑וּד | וְ֝אֵ֗שׁ | אָכְלָ֥ה | אָֽהֳלֵי־ | שֹֽׁחַד׃ |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | ምክንያቱም | ማህበር | ግብዙ | ብለኛ | -እና-እሳት | በላች | ድንክዳኖች | ግብዝ |
| | | H5712 | H2611 | H1565 | H0784 | H0398 | H0168 | H7810 |

> የዝንጉዎች ጉባኤ ሁሉ ለጥፋት ይሆናል፥ የጉቦ ተቀባዮችንም ድንኳን እሳት ትበላለች።

| 35 | הָרֹ֣ה | עָ֭מָל | וְיָ֣לֹד | אָ֑וֶן | וּ֝בִטְנָ֗ם | תָּכִ֥ין | מִרְמָֽה׃ | ס |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| | የፈጠረ | ምር | -እና-የወለደ | በደል | -እና-ማሕፀናቸው | ያዘገባል | ተንኮል | ፤ |
| | H2029 | H5999 | H3205 | H0205 | H0990 | | H4820 | |

> ጉዳትን ይፀንሳሉ፥ በደልንም ይወልዳሉ፥ ሆዳቸውም ተንኰልን ያዘጋጃል።